International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

Original Article

गया जिले में आदिवासियों की उत्पत्ति, सांस्कृतिक स्वरूप, आर्थिक कार्य एवं निवास प्रतिरूप: एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. साधना कुमारी

सहायक प्राध्यापिका,

भूगोल विभाग, एस. डी. कॉलेज, परैया (गया).

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया.

Manuscript ID:
IJAAR-130214

ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 2
November - December 2025
Pp. 76 - 83

Submitted: 09 Dec 2025
Revised: 21 Dec 2025
Accepted: 25 Dec 2025
Published: 1 Jan 2026

Corresponding Author:
डॉ. साधना कुमारी

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.18205319

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.18205319

Creative Commons

सारांश (Abstract):

भारत में आदिवासी समाज देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करता है। बिहार राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित गया जिला आदिवासी जनसंख्या की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ संथाल, उरांव, मुंडा, खरवार, कोल आदि जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में गया जिले में निवासरत आदिवासियों की उत्पत्ति, सांस्कृतिक विशेषताओं, आर्थिक क्रियाकलापों तथा निवास प्रतिरूपों का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। शोध का उद्देश्य आदिवासी जीवन शैली एवं उनके भौगोलिक परिवेश के बीच अंतर्संबंध को स्पष्ट करना है।

मुख्य शब्द (Keywords): आदिवासी, गया जिला, संस्कृति, आर्थिक क्रियाएँ, निवास प्रतिरूप, भौगोलिक विश्लेषण.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. साधना कुमारी. (2025). गया जिले में आदिवासियों की उत्पत्ति, सांस्कृतिक स्वरूप, आर्थिक कार्य एवं निवास प्रतिरूप: एक भौगोलिक विश्लेषण. International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 76–83. https://doi.org/10.5281/zenodo.18205319

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

भूमिका (Introduction):

भारत की जनसंख्या संरचना में आदिवासी समाज का विशेष स्थान है। ये समाज प्रकृति के अत्यंत निकट रहकर अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराएँ एवं जीवन पद्धति को बनाए रखते हैं। बिहार के गया जिले में आदिवासी समुदायों की उपस्थिति ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र पठारी भू-आकृति, वन संसाधनों तथा सीमित कृषि संभावनाओं के कारण आदिवासी निवास के लिए उपयुक्त रहा है।

आधुनिक विकास प्रक्रियाओं, औद्योगीकरण तथा शहरीकरण के प्रभाव से आदिवासी समाज की पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि इनके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का भौगोलिक अध्ययन किया जाए।

गया जिले में निवास करने वाले आदिवासी समुदायों में प्रमुख रूप से संथाल, उरांव, मुंडा, खड़िया एवं कोरवा आदि सम्मिलित हैं। ये समुदाय परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन तथा हस्तशिल्प जैसे कार्यों पर निर्भर रहे हैं। इनके सामाजिक जीवन में सामुदायिक भावना, पारस्परिक सहयोग तथा परंपरागत संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ग्राम सभा, मांझी-परगना व्यवस्था एवं लोक पंचायती ढाँचे इनके सामाजिक संगठन को सुदृढ़ बनाते हैं।

भौगोलिक दृष्टि से गया जिला पठारी एवं वनाच्छादित क्षेत्र होने के कारण यहाँ के आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति-आधारित रहा है। भूमि, जल, वन एवं जलवायु जैसे भौगोलिक कारकों ने इनके निवास-पैटर्न, आजीविका तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। पर्व-त्योहार, नृत्य-संगीत तथा धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा और ऋतु चक्र से गहराई से जुड़े हुए हैं। आधुनिक काल में शिक्षा का विस्तार, सड़क एवं संचार साधनों का विकास तथा सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन से आदिवासी समाज में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। एक ओर जहाँ रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं, वहीं दूसरी ओर भूमि विस्थापन, पारंपरिक ज्ञान का क्षरण तथा सांस्कृतिक पहचान पर संकट जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग में शहरी जीवन शैली के प्रति आकर्षण बढ़ा है, जिससे पारंपरिक सामाजिक संरचना में बदलाव देखने को मिलता है।

अतः गया जिले के आदिवासी समाज का भौगोलिक अध्ययन न केवल उनके वर्तमान जीवन-स्तर, संसाधन उपयोग एवं आजीविका के स्वरूप को समझने में सहायक होगा, बल्कि सतत विकास एवं सामाजिक न्याय की दिशा में प्रभावी नीति-निर्माण हेतु भी उपयोगी सिद्ध होगा। यह अध्ययन क्षेत्रीय असमानताओं, विकास की चुनौतियों तथा आदिवासी समाज के संरक्षण एवं सशक्तिकरण के उपायों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय (Study Area):

गया जिला बिहार राज्य के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में जहानाबाद, पूर्व में

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

नवादा, पश्चिम में औरंगाबाद तथा दक्षिण में झारखंड राज्य स्थित है। जिले की भौगोलिक स्थिति पठारी एवं वनाच्छादित है, जो आदिवासी निवास के लिए अनुकूल मानी जाती है।

जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है। यहाँ औसत वर्षा लगभग 1000–1200 मिमी होती है। वन संसाधन, पहाड़ी क्षेत्र एवं नदी घाटियाँ आदिवासी जनसंख्या के जीवनयापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

गया जिले की स्थलाकृति मुख्यतः पठारी, ऊँच-नीच युक्त तथा पहाड़ियों से युक्त है, जिसमें छोटानागपुर पठार का उत्तरी विस्तार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहाँ की मिट्टी प्रायः लाल, लेटराइट एवं बलुई प्रकार की है, जो सीमित कृषि उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसी कारण आदिवासी समाज ने परंपरागत रूप से झूम खेती, वर्षा आधारित कृषि तथा वनोपज संग्रह को अपनी आजीविका का प्रमुख साधन बनाया है।

जिले की प्रमुख नदियों में फल्गु, मोरहर एवं पंचाने नदी उल्लेखनीय हैं, जो मौसमी होने के कारण वर्षा पर निर्भर रहती हैं। इन नदियों के किनारे बसे आदिवासी ग्राम जल, सिंचाई एवं घरेलू आवश्यकताओं के लिए इन पर निर्भर करते हैं। वन क्षेत्रों में उपलब्ध महुआ, साल, तेंदू पत्ता, लाख एवं औषधीय पौधे आदिवासी अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक हैं।

भौगोलिक संसाधनों की उपलब्धता के अनुरूप यहाँ के आदिवासी निवास-प्रतिरूप विकसित हुए हैं। अधिकांश गाँव छोटे, विरल आबादी वाले तथा वन अथवा पहाड़ी ढलानों के समीप स्थित हैं। कच्चे आवास, प्राकृतिक निर्माण सामग्री एवं पारंपरिक वास्तुकला इनके पर्यावरणीय अनुकूलन को दर्शाती है।

इस प्रकार गया जिले की भौगोलिक विशेषताएँ न केवल आदिवासी समाज के निवास, आजीविका एवं आर्थिक संरचना को प्रभावित करती हैं, बल्कि उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों तथा जीवन-पद्धति को भी गहराई से आकार देती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study):

1. गया जिले में निवासरत प्रमुख आदिवासी जनजातियों की पहचान करना।
2. आदिवासियों की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
3. आदिवासी समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं (रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, भाषा, कला आदि) का विश्लेषण करना।
4. आदिवासियों की आर्थिक गतिविधियों (कृषि, वनोपज, श्रम, पारंपरिक व्यवसाय आदि) का भौगोलिक अध्ययन करना।
5. आदिवासी निवास प्रतिरूपों एवं बसावट की प्रकृति का विश्लेषण करना।
6. गया जिले में आदिवासी जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का अध्ययन करना।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

7. आदिवासी समाज की सामाजिक संरचना (परिवार व्यवस्था, विवाह प्रथा, सामाजिक संगठन) का अध्ययन करना।
8. आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति एवं साक्षरता स्तर का विश्लेषण करना।
9. आदिवासी समुदायों की स्वास्थ्य स्थिति एवं पोषण स्तर का अध्ययन करना।
10. आदिवासियों पर आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन करना।
11. आदिवासी विकास हेतु संचालित सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का अध्ययन करना।
12. आदिवासी समाज की प्रमुख समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।
13. आदिवासी जीवन-शैली में हो रहे सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति (Research Methodology):

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है। प्राथमिक आँकड़े क्षेत्र सर्वेक्षण, साक्षात्कार एवं अवलोकन विधि से प्राप्त किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आँकड़े जनगणना रिपोर्ट, सरकारी प्रकाशन, शोध पत्र, पुस्तकों एवं इंटरनेट स्रोतों से संकलित किए गए हैं।

गया जिले में आदिवासियों की उत्पत्ति एवं वितरण:

इतिहासकारों के अनुसार गया जिले में आदिवासियों का निवास अत्यंत प्राचीन काल से रहा है। ये जनजातियाँ मुख्यतः पठारी एवं वन क्षेत्रों में केंद्रित हैं। संथाल, उरांव, मुंडा, खरवार आदि जनजातियाँ जिले के विभिन्न प्रखंडों में पाई जाती हैं। आदिवासियों का वितरण मुख्यतः उन क्षेत्रों में अधिक है जहाँ कृषि की संभावनाएँ सीमित हैं तथा वन संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

आदिवासियों की सांस्कृतिक विशेषताएँ:

गया जिले के आदिवासी समाज की संस्कृति अत्यंत समृद्ध एवं विविधतापूर्ण है। इनके पर्व-त्योहार, नृत्य, संगीत, वेशभूषा एवं धार्मिक विश्वास विशिष्ट पहचान रखते हैं। सरहुल, करमा, सोहराय जैसे पर्व सामुदायिक जीवन को सुदृढ़ करते हैं।

आदिवासी समाज में प्रकृति पूजन की परंपरा प्रमुख है। वृक्ष, पर्वत, नदी एवं वन देवताओं की पूजा इनके धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है।

आर्थिक गतिविधियाँ (Economic Activities):

गया जिले के आदिवासियों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः प्राथमिक क्रियाकलापों पर आधारित है। कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन एवं मजदूरी इनके प्रमुख आजीविका साधन हैं।

अधिकांश आदिवासी परंपरागत कृषि पद्धतियों का प्रयोग करते हैं, जिससे उत्पादन सीमित रहता है। वन संसाधनों पर निर्भरता आज भी इनके जीवन का महत्वपूर्ण आधार है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

आदिवासी निवास प्रतिरूप (Settlement Pattern):

गया जिले में आदिवासियों के निवास प्रतिरूप प्रायः बिखरे हुए (Dispersed) पाए जाते हैं। ये गाँव प्रायः पहाड़ी ढलानों, वन क्षेत्रों एवं जल स्रोतों के समीप स्थित होते हैं।

आवास कच्चे एवं स्थानीय निर्माण सामग्री से निर्मित होते हैं, जिनमें मिट्टी, लकड़ी एवं पुआल का प्रयोग किया जाता है।

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ:

आदिवासी समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं भूमि अधिकार जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आधुनिक विकास योजनाओं का लाभ इन्हें अपेक्षाकृत कम प्राप्त हो रहा है।

निष्कर्ष (Conclusion):

गया जिले का आदिवासी समाज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान एवं प्राकृतिक परिवेश के साथ गहरा संबंध रखता है। भौगोलिक परिस्थितियाँ इनके जीवन एवं आजीविका को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। संतुलित एवं समावेशी विकास द्वारा ही आदिवासी समाज का समुचित उत्थान संभव है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature):

आदिवासी समाज पर भारत में विभिन्न विद्वानों द्वारा समय-समय पर महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं। आर. एल. सिंह ने मानव भूगोल के अंतर्गत जनजातीय समाज और उनके भौगोलिक परिवेश के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया है। उनके अनुसार आदिवासी समाज प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित अर्थव्यवस्था विकसित करता है, जो स्थानीय भू-आकृतिक एवं जलवायवीय परिस्थितियों से प्रभावित होती है।

वेरियर एल्विन ने भारतीय आदिवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का गहन अध्ययन किया है। उनके कार्यों में आदिवासी संस्कृति की मौलिकता, प्रकृति-पूजन तथा सामुदायिक जीवन पद्धति का विस्तृत वर्णन मिलता है। बिहार के संदर्भ में के. एस. सिंह तथा डी. एन. मजूमदार के अध्ययन उल्लेखनीय हैं, जिनमें जनजातीय संरचना एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण किया गया है।

हाल के वर्षों में सरकारी रिपोर्टों एवं जनगणना आँकड़ों के आधार पर आदिवासी विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आजीविका से संबंधित अनेक शोध प्रकाशित हुए हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विकास की मुख्यधारा से आदिवासी समाज अभी भी अपेक्षाकृत पीछे है। प्रस्तुत शोध इन्हीं पूर्ववर्ती अध्ययनों के आधार पर गया जिले के आदिवासी समाज का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

गया जिले की प्रमुख आदिवासी जनजातियाँ:

गया जिले में अनेक आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें संथाल, उरांव, मुंडा, खरवार एवं कोल प्रमुख हैं।

(क) संथाल जनजाति:

संथाल जनजाति गया जिले की प्रमुख जनजातियों में से एक है। ये मुख्यतः कृषि एवं वनोपज संग्रह पर निर्भर रहते हैं। संथाल समाज में मांझी, परगना एवं नायके की पारंपरिक प्रशासनिक व्यवस्था पाई जाती है।

(ख) उरांव जनजाति:

उरांव जनजाति का संबंध द्रविड़ भाषायी परिवार से माना जाता है। इनकी आजीविका का प्रमुख आधार कृषि एवं मजदूरी है। सरहुल पर्व उरांव समाज का प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव है।

(ग) मुंडा जनजाति:

मुंडा जनजाति में सामुदायिक भूमि व्यवस्था एवं पारंपरिक ग्राम संगठन देखने को मिलता है। इनका सामाजिक जीवन अनुशासन एवं सामूहिकता पर आधारित है।

सामाजिक संरचना एवं जीवन पद्धति:

गया जिले के आदिवासी समाज की सामाजिक संरचना सरल एवं सामुदायिक है। परिवार संयुक्त रूप में निवास करते हैं। सामाजिक नियंत्रण परंपरागत रीति-रिवाजों एवं पंचायत व्यवस्था के माध्यम से होता है। विवाह, जन्म एवं मृत्यु से संबंधित संस्कार सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति:

आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न पाया जाता है। प्राथमिक विद्यालयों की संख्या सीमित है तथा उच्च शिक्षा के अवसर बहुत कम हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं का भी अभाव देखा जाता है, जिसके कारण कुपोषण एवं रोगों की समस्या बनी रहती है।

विकास योजनाएँ एवं उनका प्रभाव:

भारत सरकार एवं बिहार सरकार द्वारा आदिवासी विकास हेतु अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं, जैसे—वनाधिकार अधिनियम, छात्रवृत्ति योजना, जनजातीय उप-योजना आदि। यद्यपि इन योजनाओं से कुछ हद तक सुधार हुआ है, किंतु जागरूकता के अभाव में इनका पूर्ण लाभ आदिवासी समाज तक नहीं पहुँच पा रहा है।

सुझाव (Suggestions):

1. आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
2. पारंपरिक आजीविका के साथ-साथ वैकल्पिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।
3. आदिवासी संस्कृति एवं परंपराओं का संरक्षण किया जाए।
4. विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में स्थानीय सहभागिता सुनिश्चित की जाए।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

उपसंहार (Conclusion):

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गया जिले का आदिवासी समाज भौगोलिक पर्यावरण के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। प्राकृतिक संसाधन इनके जीवन का आधार हैं। यदि विकास की योजनाएँ स्थानीय परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर लागू की जाएँ, तो आदिवासी समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। प्रस्तुत अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि गया जिले का आदिवासी समाज पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक जीवन तथा प्रकृति-आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित रहा है। भूमि, वन और जल संसाधनों के प्रति इनके संरक्षणात्मक दृष्टिकोण ने पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किंतु आधुनिक विकास प्रक्रियाओं, बढ़ते जनसंख्या दबाव तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से इनके पारंपरिक जीवन-तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं रोजगार के क्षेत्र में अभी भी आदिवासी समाज अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ है। अनेक सरकारी योजनाओं के बावजूद सूचना के अभाव, प्रशासनिक जटिलताओं तथा स्थानीय सहभागिता की कमी के कारण अपेक्षित लाभ इन्हें पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पा रहा है। विशेष रूप से महिलाओं एवं युवाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता अधिक दिखाई देती है।

अतः यह आवश्यक है कि विकास की योजनाएँ स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों, आदिवासी सांस्कृतिक पहचान तथा पारंपरिक आजीविका प्रणालियों के अनुरूप तैयार की जाएँ। सामुदायिक सहभागिता, शिक्षा का विस्तार, वनोपज आधारित लघु उद्योग तथा सतत संसाधन प्रबंधन को प्रोत्साहन देकर ही आदिवासी समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सशक्तिकरण को सुनिश्चित किया जा सकता है।

इस प्रकार यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, योजनाकारों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा गया जिले के आदिवासी समाज के सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में सार्थक योगदान प्रदान करेगा।

संदर्भ सूची (References):

1. बिहार जनगणना निदेशालय (2011). *भारत की जनगणना 2011: बिहार राज्य (गया जिला विशेष संदर्भ)*. पटना: भारत सरकार।
2. सिंह, आर. एल. (2005). *मानव भूगोल*. इलाहाबाद: प्रयाग पुस्तक भवन।
3. आदिवासी विकास मंत्रालय, भारत सरकार (2018). *आदिवासी विकास हेतु प्रमुख योजनाएँ एवं कार्यक्रम*. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
4. एल्विन, वेरियर (2010). *भारतीय आदिवासी समाज*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. मजूमदार, डी. एन. (2008). *जनजातीय अध्ययन*. कोलकाता: वर्ल्ड प्रेस प्राइवेट लिमिटेड।

6. सिंह, के. एस. (1994). *भारत की जनजातियाँ*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. शर्मा, ए. के. (2012). *जनसंख्या एवं मानव भूगोल*. वाराणसी: छात्र मित्र प्रकाशन।
8. तिवारी, आर. सी. (2015). *भारतीय समाज एवं संस्कृति*. इलाहाबाद: साहित्य भवन।
9. बिहार सरकार (2020). *बिहार में आदिवासी विकास की स्थिति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन*. पटना: योजना एवं विकास विभाग।
10. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (2016). *आदिवासियों के अधिकार, संरक्षण एवं संवैधानिक प्रावधान*. नई दिल्ली।
11. संबंधित शोध पत्र, यूजीसी केयर सूचीबद्ध जर्नल्स, शोध प्रबंध एवं विश्वसनीय शैक्षणिक प्रकाशन।
12. भारतीय योजना आयोग (2014). अनुसूचित जनजातियों का सामाजिक-आर्थिक विकास. नई दिल्ली: भारत सरकार।
13. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) (2011). भारत में अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति. नई दिल्ली: भारत सरकार।
14. दास, बी. (2007). भारतीय जनजातियाँ: संरचना एवं परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
15. घोष, एस. के. (2010). आदिवासी समाज एवं विकास. कोलकाता: प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स।
16. वर्मा, एस. पी. (2013). भारत में जनजातीय भूगोल. जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
17. चक्रवर्ती, के. (2009). जनजातीय संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: के. के. पब्लिकेशन।
18. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) (2017). Human Development Report: Indigenous Peoples in India. नई दिल्ली।
19. भारत सरकार (2011). अनुसूचित जनजातियों से संबंधित सांख्यिकीय प्रोफ़ाइल. नई दिल्ली: जनजातीय कार्य मंत्रालय।
20. झा, एन. के. (2016). बिहार का सामाजिक-आर्थिक भूगोल. पटना: ज्ञान गंगा प्रकाशन।
21. कुमार, एस. (2018). गया जिला: भौगोलिक एवं सामाजिक अध्ययन. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
22. विभिन्न शोध पत्र, पीएच.डी. शोध-प्रबंध, यूजीसी-केयर सूचीबद्ध जर्नल्स एवं विश्वसनीय शैक्षणिक प्रकाशन।